खेलने के दिन

रामजी यादव

खेलने के दिन

और रोज़ की तरह उस दिन भी बच्चों ने खेलने का मन बना लिया जब वे नदी के उस खार के पास पहुंचे जहां बंजर मैदान था। जहां पहुंचते-पहुंचते अगल-बगल के मैले थुथुनियाते कुछ सुअर नाले के कीचड़ में लोटने लगते। कुछ माथा लड़ाते, गुर्राते और कुछ चारे की टोह में दूर निकल जाते। ताजी बियायी सूअर बबूल की छांव में आराम से पसर जाती और छौने चुपुर-चुपुर दूध पीने लगते। वहीं आम के तीन पेड़ थे जिनके नीचे कंकड़ की ढेर सारी तराशी-तराशी गोलियां, पिल्ली और ढब उपस्थित रहते।

इसी तरह लड़कियों के भी खेलने के साज़ो-सामान मौजूद थे। भीटे की मिट्टी गांव की गृहिणियां चूल्हा पोतने के लिए ले जातीं। उनकी कारीगरी से बनी खोह

में लड़कियों ने अपनी गृहस्थी जमा ली। चिमटा, फ़ूकनी, चूल्हा, कलछुल, तवा, थाली, कटोरा, चौका और बेलन करीने से रख दिये गए। टिन के दो डिब्बे बहुउपयोगी थे। आम की ढेर-सी सूखी टहनियों की मौजूदगी से जल्दी ही चूल्हा जलने का अंदेशा था।

सबसे बडी लड़की का नाम मंगरी था। वह मंगलवार को जन्मी थी। उसने बच्चों की पूरी फ़ौज़ को संबोधित किया- 'का रे! आओ कुल मिला, चलो खेला जाए। घर-घरौदा खेला जाए। तू हो सरधा ! तू बिफई बन जाव। पियारे गोलई बनें और सुज्जन ! तू धन्नी बन जाव। बाकी सब कोई में से दूय जनी लड़की और लड़की की माई बनें। झिंगाटू लड़की के बाप रहें।'

'और तू मैनी। हमरी समधिन। है न!' झिंगाटू ने खीस निकाली।

'ठीक है भाई, हम मैनी भए। पहिले खंझाटी, सुज्जन दूनों दूं जने बिफया के संग गांजा पिएं। जब गोलई लौटें तब बिफई भाग जाएं। जैसे गोलई बाप हो गए। बिफई बेटवा।'

'धन्नी का करैं?'

'धन्नी दूल्हा की ओर से चौधरी बनें लेकिन जब बरात जाए तब।'

इस तरह सारे बच्चे खेलना शुरू करते। पियारे की उमर दस साल थी लेकिन वे बडे शान से चालीस साल के गोलई का रोल कर रहे होते। अगर कभी इतिहास लिखा जाएगा तो लिखने वाले को लिखना पड़ेगा कि जिन लोगों ने जिन्दगी को नाटक बनाया उनमें एक महान अभिनेता पियारे भी थे। पियारे ने मटमैली गंजी और गमछा धारण कर रखा था। भगई बांधे हुए हाथ में लक्सी लिए पत्ता तोड़ने चल दिये। उन्हें दोपहर में लौटना है, तब तक वे पत्ता तोड़कर पत्तल बना बाज़ार में बेंच चुके होंगे।

मंगरी चालीस साल की मैनी बन गई। मटमैले गमछे की लुंगी पहने थी। उस पर महुये के दूध के दाग जगह-जगह ऐसे लगा था गोया छींट का कपड़ा हो। अपनी मां का फटा और मात्र दो बाकी बचे बटनों से शोभित ब्लाउज़ पहने हुए थी। ब्लाउज़ की एक बांह कंधे से और दूसरी कई जगह से फटी थी। मैनी ने खाना बनाना शुरू कर दिया। मूस की सब्ज़ी और मछली का अचार रोटी के साथ दोपहर का भोजन होगा। खाना बनाकर मैनी इन्तज़ार करेगी। उसके बन के राजा यानि पति गोलई बाज़ार से दोपहर में लौटेंगे।

बिफई वल्द गोलई उम्र बीस साल अपने बाप की सारी विशिष्टतायें धारण करते थे। गेहुंअन, कौआडोम, भैंसाडोम, धामिन, करैत, डेड़हा और गोह पकड़ते बाएं हाथ से और उनका खून निकाल कर दाएं हाथ से पीते। किसी भी पेड़ को छह कुल्हाड़े में गिरा देने की कूव्वत रखने वाले बिफई जी सुर्ती फ़ांकने, बीडी फूंकने में अपने बाप से दस हाथ आगे माने जाते। दिन भर में बीस चिलम गांजे की खुराकी मानी जाती थी लेकिन अपने पिताश्री के सामने नहीं पीते थे। कुछ मुसहर इसे उनका अदब कहते थे।

सरधा जी ने बिफई का रूप धरा।

असली बिफई असली गांजा पीते थे लेकिन नकली बिफई ने सुर्ती, जिसे वे जब तब फाँकते नज़र आते थे, का गांजा तैयार किया। भले ही गाँजा सुर्ती का हो लेकिन तरीका बिल्कुल पक्के बिफई मार्का गंजेड़ी का था। चिलम में गिट्टी लगा कर सुर्ती भरी। सुतली जलाकर आग दबाई और काशी के संरक्षक शंकर को भोग लगाया– 'बम्म भोले!'

सचमुच बम जैसा धमाका हुआ। सारे लोगों ने चकपकाकर उधर देखा, फ़िर ज़ोर से हंसे। ज़ैसे कबूतरों का झुंड उड़ा हो।

बिफई तन्मय थे –'बम–बम भोले भूल मत जाना। काशी छोड़कर दूर मत जाना।'

'कारे, आओ कुल मिला। जल्दी आओ ससुरो। नाहीं अगिया बुत जाएगी।'

सुज्जन और झिंगाटू दौड़कर पहुंचे – 'जगा दिए रे बिफया। पट्टे मार दू' फूंक।'

'ले ले। तैं ले थाम। जगाव जरी–सी।'

बिफई ने सुज्जन की ओर चिलम बढ़ाई।

चिलम माथे से चढाकर सुज़्ज़न बोले–

'शंकर दानी महाकल्यानी'

तीन फूंक में सुज्जन ने चिलम से लपट निकाल दी।

झिंगाटू उत्तेजित हुए और एक कवित्त पढ़ा–

'बा पट्ठे बाह। गांजा पिएं राजा
तमाखू पिएं चोर,
सुर्ती खाएं चूतिया
थूकें चारिउ ओर।'

लड़कियों ने झिंगाटू को कविता में बाज़ी मारते देखा तो उनको मुश्किल हुई। दो ने एक साथ कहा–

'डीह बाबा लंगड़े
पुजारी बाबा चोर।
काली माई करिया
भवानी माई गोर।'

तीनों गंजेड़ी सन्न। आगे कविताएं नहीं आती थीं। सुज्जन ने हाथ नचाकर लड़कियों को चिढ़ाना चाहा लेकिन लड़खड़ा कर गिर पड़े। लड़कियां दुगुने वेग से हंस पड़ीं।

बिफई ने दो फूंक खींचा। जल्दी में उन्हे खांसी आ गई। उन्होंने चिलम झिंगाटू को थमा दिया।

कुछ खट–खट हुई। उन्होंने सिर घुमाया तो देखा कि उनके पिताजी बाज़ार से लौट चुके थे। वे बार–बार लक्सी जमीन पर पटक कर बिफई को संकेत कर रहे थे–'भाग ससुरा! तुम्हे पता नहीं बिफया अपने बाप के सामने गांजा नहीं पीता।'

बिफई ने अभिनय का सिरा पकड़ा। तुरंत भाग पड़े। बबूल के नीचे बैठी सूअर के पीछे बैठकर एक बच्चे को हटाते हुए सूअर की चूची गमछे से पोंछ कर उसका दूध पीने लगे। हाथ में लक्सी लिए गोलई टहल रहे थे। आम के पेड़ के नीचे खड़े हो कर कान में ऊँगली डालकर गाने लगे। उनका सुर ऊपर चढ़ता गया।

बरवा की पतिया की बीनि के पतरिया
हमहन खिआईं सब के साथ हो
हमने के छौना–चिरैयन के काहे मिले
जूठी पतरिया कै भात मोरे भइया
सुरुज, चनरमा, तरइया, जोन्हइया
हमने के गंउवां कै रसता भुलाइ गए
जोहत बीती ऊमर बनवा में हमनी के
मड़ई में होए कब अंजोर मोरे भइया...

वे गंजेडियों के पास पहुंचे–'का रे। ससुरा बिफया गांजा पियत रहा का रे। तोन्हें चिलम चढ़ाए रहा का रे भंडुआचोद। हमरे बेटवा के खराब करत है रे। आयं।'

'नाईं गोलई दद्दा' नाईं। ऊ सरवा बिफया खुद्दे चढ़ाए रहा। हमन्ने बाद में आए।' झिंगाटू ने हाथ जोड़ कर कहा।

गोलई ने उनके हाथ से चिलम ले ली। दम लगाया लेकिन धुआं ही नही निकला। उन्होंने चिलम उलट दी – केवल राख बची थी।

उन्होंने दहाड़ कर कहा– 'भाग भड़ुआचोद, एम्मे तो राखी बची है बस।'

वे लक्सी उठाकर अपने घर पहुंचे। गला खंख़ार कर ज़रूरत पर नाईं मिलत है। ससुरा गुड़ का नफ़ा चूंटा ही खात है।'

'का है हो बिफया के बाऊ!' मैनी बोली। आसपास खड़े सभी बच्चे मुस्कुराए।

'होए का रे। पइसा नाहीं मिला।'

गोलई ने गला खंखारकर कहा– 'निहोर साव के हां दूय हज़ार दोने का बीस रुपया बाकी है। पचास तफ़ेसरी के यहां है। कहते हैं आज दिए काल दिए। महिन्ना बीता। सब के लिए होत है। हमरी खातिर नाहा।'

मैनी ने पूछा–'अहिरनवां में किसोर के यहां जो असवरिया गई रही, दिए कि नाईं।'

'अरे हां रे।' गोलई को याद आया– 'देखा भाई एन्हें की। ससुर बड़का अहिर की पोंछ बनते हैं। पैतालिस रुपिया कै तगादा पैतालिस सौ दफ़ा करि चुका। दारू के आगे ससुर कुछ सूझते नाहीं हौ।'

'नत्थू पांड़े की माई मरा। सात सौ पतरी गई रही। आज तक पांड़े नूह नाइ कटाए।'

गोलई ने दार्शनिक भाव से कहा–'मिली ससुर। जाई कहां। बाकी तब मिली जब पांड़े मसान पर जाएंगे तब। निहोर साव भी आज कल किए हैं। उनका लड़िकवा है न मंझिलका। खटिकनवा वाले डकैतिया के केसवा में फ़ंसा रहा। ऊ तो शहर वाले नेता जी के असिरबाद से छूटि गया। उन्हीं से मिलै गये रहे निहोर साव। उनका लड़िकवा भी पट्ठा एकदम मतवाल है। कहत है झुकेंगे तो बाबू समसेर सिंघ के आगे। ई सब झांटू-झिंग़ाटू का होत हैं।'

'बिफया के बाऊ हमन्ने का कुल पचास बीस सत्तर और पैतालिस...माने कि सत्तर में पैंतालिस का तीस गया सौ और पनरह... कुल एक सौ पनरह। जल्दी वसूल लेव। घर बरखा में हदर-हदर चुअत है। एह दफ़ा छ्वा लेते।'